आभार

मैं सर्वप्रथम परमपिता परमेश्वर को कोटि–कोटि प्रणाम करती हूँ, जिनके असीम कृपा से भारतीय नृत्यकला जैसी विशुद्ध क्षेत्र में मुझे कार्य करने का सुवर्ण अवसर प्राप्त हुआ। परमेश्वर के प्रति आस्था, विश्वास एवं कृपा के बिना कोई भी कार्य को करना सम्भव नहीं होता है, इसलिए ईश्वर को मैं बारम्बार प्रणाम करती हूँ, वन्दन करती हूँ, जिनकी आराधना से मुझे इस बृहद कला जगत में कार्य करने हेतु मानसिक एवं बौद्धिक रूप से सहायता प्राप्त हुई।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पूर्ण रूप से सफल एवं साकार रूप प्रदान करने के लिए सर्वप्रथम मैं मेरी शोध निर्देशिका एवं गुरु ''डॉ0 स्मृति वाघेला'' (सहायक आचार्या, नृत्य विभाग, महाराजा सयाजी राव विश्वविद्यालय, बड़ोदरा) जी का हृदय से आभार प्रकट करती हूँ, जिनके निर्देशन में मैं यह बृहद कार्य करने में सफल हो सकी। मेरा शोध विषय नाट्यशास्त्र के करण जो कि अपने आप में अत्यन्त गहन है, आपने न केवल ''करण'' और नृत्य की इस विख्यात विधा से अवगत कराया बल्कि इस सम्पूर्ण कार्य में अपना बहुमूल्य समय एवं सतत् मार्गदर्शन के साथ–साथ प्रत्येक क्षण प्रोत्साहित करती रहीं, जिससे मेरा यह कार्य सरलतापूर्वक सम्पन्न हो सका। आपके मार्गदर्शन के बिना इस विषय पर कार्य करना मेरे लिए असम्भव था, अतः आपके प्रति हृदय से आभार एवं

कृतज्ञता अर्पित करती हूँ एवं भविष्य में भी आपकी कृपा दृष्टि बनी रहे और इस विषय को और भी ऊँचाई तक ले जा सकूँ यही मेरी कामना है।

मुझे नृत्यकला जैसी एक विशाल क्षेत्र में प्रवेश कराने एवं प्रारम्भ से मुझे आज यहाँ तक पहुँचने के योग्य बनाने में मुख्य भूमिका के रूप में गुरू श्री प्रेमचन्द होम्बल (भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, नृत्य विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी) एवं गुरुमाता श्रीमती माला होम्बल जी के चरण में वन्दन करती हूँ, जिनके अथक प्रयास, मार्गदर्शन, प्रोत्साहन एवं शिक्षा के कारण मुझे आज नृत्य विषय में शोध कार्य करने का सुवर्ण अवसर प्राप्त हुआ एवं कुशलतापूर्वक पूर्ण करने में सफल हो सकी। मैं आप दोनों को कोटिश प्रणाम करते हुए आभार व्यक्त करती हूँ।

मैं आभारी हूँ अपने संकाय प्रमुख एवं नृत्य विभागाध्यक्ष प्रो0 राजेश केलकर जी एवं संकाय के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में सहयोग करने के वाले सम्पूर्ण गुरुजनों का आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके निःस्वार्थ सहयोग से यह कार्य कुशलतापूर्वक हो सका।

''माता–पिता चरणकमलेभ्यो नमः।।''

हमारे जीवन में माता–पिता का दायित्व एवं कर्तव्य का कितना महत्वपूर्ण स्थान होता है। यह शब्दों में उल्लेख करना अत्यन्त कठिन कार्य होगा। मैं अपने परम पूज्य पिता जी ''श्री धूपनारायण तिवारी'' ममतामयी माता ''श्रीमती आशा तिवारी'' जी को हृदय से चरणकमल में प्रणाम अर्पित करती हूँ, जिनके निःस्वार्थ प्रेम एवं मेरी कलात्मक यात्रा को समझकर मुझे प्रत्येक क्षण प्रोत्साहित करने के साथ–साथ यहाँ तक पहुँचाने के लिए उनका हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। पिता समान गुरुजी ''श्री रविन्द्र

नारायण गोस्वामी जी'' माता ''श्रीमती शुभा गोस्वामी'' जी को अपने स्नेहपूर्वक आशीर्वाद प्रदान करने के लिए हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। अपने बड़े भाई श्री महीश तिवारी एवं भाभी श्रीमती श्रावणी तिवारी, जिन्होंने मेरी इस यात्रा में दिन हो या रात वे मेरा हमेशा साथ देकर मेरा उत्साहवर्धन करते रहे, जिनके लिए मैं सदैव आभारी रहूँगी।

मैं कोटिशः आभारी हूँ पद्मभूषण डॉ0 पद्मा सुब्रह्मण्यम जी की, जिन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन को नृत्य के लिए समर्पित कर नाट्यशास्त्र के करण जैसे गहन विषय पर अध्ययन किया एवं अनेक विद्यार्थियों में अपने ज्ञान का संचन किया। मैं धन्यवाद देती हूँ उन सभी नृत्य कला के विद्वान् एवं अन्य विद्वानों को, जिनके साक्षात्कार एवं बहुमूल्य सुझाव के लिए जिनके सही मार्गदर्शन से यह कार्य कुशलपूर्वक हो पाया। मैं विशेष आभारी हूँ श्री प्रेमचन्द्र होम्बल जी, डॉ0 उमा रेले जी, श्री जयश्री गोपालन जी, विद्या साठे जी, महती खन्ना, डॉ0 मारूतिनन्दन तिवारी जी, डॉ0 सुभाषचन्द्र यादव जी, डॉ0 ज्योति सिंह, डॉ0 रंजना उपाध्याय, श्री शिवा पिल्लै जी जिनके सहयोग एवं मार्गदर्शन में यह कार्य कुशलतापूर्वक सम्पन्न हो सका।

प्रभु कृपा से प्रिय मित्र एवं जीवनसाथी के रूप में ''डॉ0 हरि प्रसाद पौड्याल'' जी का साथ मुझे मिला, जिन्होंने हर पल, हर क्षण इस कार्य को पूर्ण रूप से साकार बनाने में मुख्य भूमिका निभाई है। जिनके सागर समान सहयोग एवं आकाशरूपी प्रेम ढाल के समान इस कार्य में आयी बाधाओं से मुझे लड़ने का सामर्थ्य देती रही। मेरी भावनाओं के आगे आभार शब्द कम पड़ रहे हैं। इस कार्य को केवल एक शोध कार्य न समझते हुए संगीत के प्रति अपना दायित्व समझ कर इसे पूर्ण करने की समझ एवं साथ देने के

लिए मैं उनका धन्यवाद देती हूँ। आमा ''राधिका पौड्याल'' जी को नमन करती हूँ निःशब्द से मेरी भावनाओं से जुड़ी रही और अपने आशीर्वाद निरन्तर प्रदान करते हुए मेरे कार्य को कुशलतापूर्वक पूर्ण करने की प्रार्थना करती रही एवं समस्त पौड्याल परिवार का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने हमेशा मुझे इस कार्य के लिए प्रोत्साहित किया है।

मैं आभारी हूँ अपने जीवन से जुड़े उन सभी मित्रों का जिन्होंने जाने–जनजाने इस कार्य में मेरा साथ दिया। ''कार्तिक तिवारी'' (Photography), ''अमित गुप्ता'' (Makeup Artist), प्रिय मित्र भाई ''डॉ0 शारदा प्रसन्ना दास'', ''हर्षदा चौहान'', ''प्रतिभा सिंह'', ''अवनी पगार'' एवं प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से अन्य सभी मित्र इत्यादि।

अतः अन्त में मैं इस शोध कार्य को साकार रूप प्रदान हेतु श्री आशीष कुमार जी को धन्यवाद देती हूँ, जिन्होंने पूरे टंकण कार्य को दूरभाष के माध्यम से साकार करने में मेरे साथ अहम भूमिका निभाए एवं मुझे अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया। यह अत्यन्त कठिन एवं चुनौतीभरा कार्य रहा, जिसके लिए मैं ह्रदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

,